प मा । प १

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

परिचय परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(व्याकरण)

समय : दो घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर दो सौ पचास (२५०) शब्दों में एक **निबन्ध** लिखिए— ३०

(क) देश में सफाई-अभियान।

(ख) हमारा स्वतन्त्रता-उत्सव।

(ग) मॉरिशस में गन्ना-उद्योग।

(घ) आपने अपना जन्मदिन कैसे मनाया?

(ङ) पुस्तकालय से लाभ।

२. (अ) निम्नलिखित शब्दों से सन्धि कीजिए– १०

कपि+ईश, नर+उत्तम, प्रति+उत्तर, महा+औषधि, गै+अक

(आ) दिये गये शब्दों का पर्यायवाची शब्द लिखिए– ५

परिश्रम, शिक्षक, शशि, ग्रन्थ, मनोरम।

३. (अ) निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग लिखिए– ५

मोर, पंडित, छात्र, मामा, अध्यापक।

(आ) निम्नलिखित शब्दों का विलोमार्थक शब्द लिखिए– ५

दिवस, योग्य, सुगन्ध, सच्चा, साफ।

४. विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए। १०

(कृपया पन्ना उलटिए)

५. निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं **तीन (३)** का वाक्यों में प्रयोग कीजिए– १२

हाथ धोना, आग लगाना, घी का दीया जलाना, दाँत पीसना, आँसू पोंछना।

६. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए। १०

(क) तूम पाठशाला जाते हो।

(ख) शाम को मैं भात खाया था।

(ग) लड़कियों कक्षा में पढ़ती हैं।

(घ) बस्ता में लाल कलम है।

(ङ) आप कब शहर जाओगे?

७. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **चार** (४) का संस्कृत में अनुवाद कीजिए– ४

देव को, मुँह, वहाँ, घर, लड्डू, बरतन।

८. निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं **तीन** (३) का हिन्दी में अनुवाद कीजिए– ९

(क) बालकः तत्र क्रीडति।

(ख) मम गृहं नगरं समीपे अस्ति।

(ग) रामः पुस्तकं पठति।

(घ) रमेशः प्रातः काले मन्दिरं गच्छति।

(ङ) कृष्णः सदा सत्यं वदति।

प मा । प २

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

परिचय परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(पठित पद्य)

समय : दो घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित पद्यों में से किसी **एक** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए– २०

(क) राम काजु सबु करिहहु तुम्ह बल बुद्धि निधान।
आसिष देइ गई सो हरषि चलेउ हनुमान।।

अथवा

(ख) कपि के बचन सप्रेम सुनि उपजा मन बिस्वास।
जाना मन क्रम बचन यह कृपासिंधु कर दास।।

२. निम्नलिखित पद्यों में से किसी **एक** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए– २०

(क) अन्याय ऐसे, पुरुष होकर हाय! हम सहते रहे,
करके न कुछ उद्योग विधि की बात ही कहते रहे।
हम चाहते तो एक होकर क्या न कर सकते भला ?
पर एक्य का तो नाम लेते ही यहाँ घुटता गला।

अथवा

(ख) हैं ठीक पुत्रों के सदृश ही पुत्रियों का मान भी,
क्या आज की–सी है दशा, जो न उनका ध्यान भी।
हैं उस समय के जन न अब से जो उन्हें समझें बला,
होंगे न दोनों नेत्र किसको एक–से प्यारे भला?

३. निम्नलिखित पद्य की व्याख्या कीजिए– १५
जो पूर्व में हमको अशिक्षित या असभ्य बता रहे–
वे लोग या तो अज्ञ हैं या पक्षपात जता रहे।

४. हनुमान तथा लंकिनी नामक राक्षसी की भेंट को अपने शब्दों में लिखिए। १५

(कृपया पन्ना उलटिए)

५. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए– १५
हरष, बाबा, गुन, सोका, अगिनि।

६. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखिए। १५

बलवान, सुख, निशा, प्रथम, शिक्षित।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

परिचय परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(पठित गद्य)

समय : दो घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) लेकिन जब वे आ गये, तो यह भी पता न चल सका कि किसी सवारी से आये हैं, या पैदल। दरवाजे पर बहुत ही हलके से ठक्–ठक् हुई। मुझे उनका इन्तजार था, इसीलिए फौरन समझ गया कि वे ही हैं। लगा जैसे नीचे एक बहुत लम्बी गाड़ी आ खड़ी हुई है और वे उससे उतरकर ऊपर चले आये हैं।

(ख) आधी रात का वक्त था। मेहमान खाना खाकर एक–एक करके जा चुके थे। माँ दीवार से सटकर बैठी आँखें फाड़े दीवार को देखे जा रही थीं। घर के वातावरण में तनाव ढीला पड़ चुका था। मुहल्ले की निस्तब्धता शामनाथ के घर पर भी छा चुकी थी, केवल रसोई में प्लेटों के खनखने की आवाज आ रही थी।

(ग) हल्कू ने फिर चादर ओढ़ ली और गर्म राख के पास बैठा हुआ एक गीत गुनगुनाने लगा। उसके बदन मे गरमी आ रही थी, पर ज्यों–त्यों शीत बढ़ती जाती थी, उसे आलस्य दबाये जाते थे। जबरा जोर से भूंककर खेत की ओर भागा।

(घ) मालती के पति का नाम है महेश्वर। वे एक पहाड़ी गाँव में सरकारी डिस्पेन्सरी के डाक्टर है। उसी हैसियत से इन क्वार्टर्स में रहते हैं। प्रात:काल सात बजे डिस्पेन्सरी चले जाते हैं और डेढ़ या दो बजे लौटते हैं। उसके बाद दोपहर–भर छुट्टी रहती थी।

(कृपया पन्ना उलटिए)

२. 'चीफ की दावत' कहानी का सारांश लिखिए। १५

अथवा

'पूस की रात' की मुख्य घटनाएँ अपने शब्दों में लिखिए।

३. अभिमन्यु अनत के उपन्यास की चर्चा कीजिए। १५

४. हिन्दी के प्रचार–प्रसार में बैठकाओं के योगदान का उल्लेख कीजिए। १५

५. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं **दो (२)** पर प्रकाश डालिए– १५

(क) पंडित वासुदेव विष्णुदयाल।

(ख) द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन।

(ग) हिन्दी नाटक।

(घ) हिन्दी प्रचारिणी सभा।

प्र मा । क ४

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

प्रथमा परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(पठित गद्य और कहानी)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए– २०

(क) जिस कसौटी, परिभाषा और सूत्र के अनुसार हम लोग आपस में एक दूसरे को जाँचते और परखते हैं, वही परिभाषा यदि वहाँ भी लगायें उसे परखें, तो उनकी ईश्वरता की सब कलई खुल जाय और दुनिया की हालत देख अवश्य चित्त में यही समाय कि वह कोई बड़ा ही अनोखा खेलवाड़ी है।

(ख) तर्क और विश्वास दोनों संसार के चलाने की ऐसी अद्‌भुत शक्तियाँ हैं कि जिनके न रहने से मनुष्य के मनुष्यत्व में अन्तर पड़ जाता है। जब तक आदमी का होशहवास दुरुस्त है, तब तक तर्क और विश्वास दोनों भरपूर काम देते हैं।

(ग) नीयत फलती है। नीयत की बरकत–सत्य की बाँधी लक्ष्मी फिर मिलेगी आय–इत्यादि कहावतों से मालूम होता है। ये उन अगाध बुद्धि गम्भीराशय लोगों के सिद्धान्त हैं, जिन्होंने संसार में मनुष्य के चित्तों को खूब थहाया या समझा है।

(घ) यदि दृढ़ और सच्ची लौ लगी है तो इस डोर में गाँठ भी नहीं पड़ती क्योंकि गाँठ तो तभी पड़ सकती है जब लौ लगाने वाले को कहीं दूसरा सहारा हो; जब उसने अपने को अनन्यशरण और अगतिक मान लिया तब उसके लिए सिवाय उपास्य देव के और कौन अगतिक का गति और शरण देनेवाला हो सकता है।

(कृपया पन्ना उलटिए)

२. अधोलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– २०

(क) अपने साहसिक अभियान में अरुण बन्दी हुआ। दुर्ग उल्का के आलोक में अतिरंजित हो उठा। भीड़ ने जयघोष किया। सबके मन में उल्लास था। श्रावस्ती दुर्ग आज एक दस्यु के हाथ में जाने से बचा। आबाल–वृद्ध–नारी आनन्द से उन्मत्त हो उठे।

(ख) पुरातत्व का विशेषज्ञ हूँ। इस विषय में मेरा वाक्य अन्तिम वाक्य है। जब मैंने कह दिया तब और कौन उसे गलत बता सकता है।

(ग) समय के परिवर्तन होते ही आदमी कितना बदल जाता है विशेष रूप से जब कोई लम्बी अवस्था तक नाकाम हो जाता है तो अपने भी उनसे मुँह मोड़ने लगते हैं।

(घ) माया का इस तरह से हुक्म चलाते देखकर मन ही मन यह सोचता कि पिछले जन्म में माया कहीं फौज में तो नहीं थी, फिर दूसरे ही क्षण सोचता घरेलू कार्य की व्यस्तता से दूसरे लोग कभी के नौकरी छोड़ गये होते। सच ही कहते हैं स्त्री सहनशीलता की देवी होती है। माया की स्थिति देखकर कोई भी यह मानने को तैयार हो जायेगा कि नारी सहनशीलता की मूर्ति होती है।

३. निम्नलिखित में से किसी **एक** का जीवन–परिचय लिखकर उसकी भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए– १०
जयशंकर प्रसाद, बेढब बनारसी, धनराज शम्भु।

४. अधोलिखित में से किसी **एक** पाठ का सारांश लिखिए– २०
परम्परा, तर्क और विश्वास, नीयत, रुचि।

५. 'प्रेम विवाह' कहानी के आधार पर 'अनिला' का चरित्र–चित्रण कीजिए। १०

६. अधोलिखित कहानियों में से किसी **एक** का सारांश लिखिए– १०
तीन बच्चों वाली माँ, पुरस्कार, पुरातत्व के पण्डित।

७. हिन्दी गद्य साहित्य के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश डालिए। १०

प्र **मा । क ५**

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

प्रथमा परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(पठित पद्य, रस, छन्द तथा अलङ्कार)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित पद्य-खण्डों में से किन्हीं **दो** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) झुकी टहनियाँ तोड़-तोड़कर, बनचर भी खा जाते हैं,
शाखा-मृग कन्धों पर चढ़कर, भीषण शोर मचाते हैं,
दीन-बन्धु की कृपा बन्धु जीवित है, हाँ हरियाले हैं।
भूले-भटके कभी गुजरना, हम वे ही फल पाले हैं।।

(ख) ऊपर नीचे तम ही तम में बन्धन है अवलम्ब यहाँ,
यह भी नहीं समझ में आता गिरकर मैं जा रहा कहाँ,
काँप रहा हूँ भय के मारे, हुआ जा रहा हूँ म्रियमाण,
ऐसे दुखमय जीवन से हा! किस प्रकार पाऊँ मैं त्राण?

(ग) नहीं सफाई देने की बारी आई है, छिपे रहो।
नहीं झलक अब तक प्रियतम ने दिखलाई है, छिपे रहो।
यों ही ढुलक पड़ोगे, तो मिट्टी में मिल जाओगे यार।
'लोचन जल रहु लोचन कोना' यही विनय है बारम्बार।

२. निम्नलिखित कवियों में से किसी **एक** कवि का संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखते हुए उसकी भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए– ३०

(क) पं० माखनलाल चतुर्वेदी।
(ख) श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'।
(ग) श्री बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'।

(कृपया पन्ना उलटिए)

३. निम्नलिखित में से किसी **एक** रस की परिभाषा तथा उदाहरण लिखिए– १०

(क) हास्य रस।
(ख) करुण रस।
(ग) भयानक रस।

४. निम्नलिखित अलङ्कारों में से किसी **एक** की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए– १०

(क) श्लेष अलंकार।
(ख) रूपक अलंकार।
(ग) उपमा अलंकार।

५. निम्नलिखित छन्दों में से किसी **एक** छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए– १०

(क) सोरठा।
(ख) शिखरिणी।
(ग) चौपाई।
(घ) दोहा।

प्र   मा । क ६

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

प्रथमा परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(निबन्ध रचना, व्याकरण एवं अनिवार्य संस्कृत)

समय : तीन घण्टा)   (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर केवल ३०० शब्दों में निबन्ध लिखिए— २०

(क) अनुशासन।
(ख) राष्ट्रीय त्योहार।
(ग) प्रदूषण।
(घ) श्रीमद्भगवद्गीता।

२. निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों में से किन्हीं **पाँच** वाक्यों को शुद्ध कीजिए– १०

(क) सीता विद्यालय जाता है।
(ख) रमेश भोजन बनाती है।
(ग) सुजीत सेब खाती है।
(घ) विद्यार्थी प्रात:काल उठता है।
(ङ) श्यामू कल दिल्ली जायेगी।
(च) विद्या से विनय प्राप्त होती है।
(छ) ईश्वर-स्मरण सभी दुखों को नष्ट करती है।

३. निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं **चार** का अर्थ लिखिए– १०

(क) आँख लगना।   (ख) लाल-पीला होना।
(ग) सिर चढ़ाना।   (घ) दाँत खट्टे कर देना।
(ङ) बाल-बाल बचना।

४. निम्नाङ्कित शब्दों में से किन्हीं **दो** का विलोम लिखिए— ५

विद्या, विनय, ज्येष्ठ, राक्षस।

(कृपया पन्ना उलटिए)

५. निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के **दो-दो** अर्थ लिखिए– ५

आकाश, प्रेम, पंकज, अक्षर।

६. संज्ञा एवं सर्वनाम में से किसी एक की परिभाषा सोदाहरण लिखिए। १०

७. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी **एक** का अर्थ हिन्दी में लिखिए– १०

(क) पितुः भगिनी पितृष्वसा। तस्याः पुत्रः पैतृष्वसेयः। मातुः भगिनी मातृष्वसा तस्याः पुत्रः मातृष्वसेयः। पितृव्यपुत्रः पितृव्यजः। भगिन्याः सुतः भागिनेयः। पुत्री दुहिता कथ्यते। दुहितुः पतिः जामाता भवति। तस्याः पुत्रः दौहित्रः भवति।

(ख) भारते प्रथमः मासः चैत्रः द्वितीयः मासः वैशाखः। चैत्रे वैशाखे भवति वसन्तः ऋतुः। तृतीयः मासः ज्येष्ठः। चतुर्थः मासः आषाढ़ः। ज्येष्ठे आषाढ़े ग्रीष्मः। पञ्चमः मासः श्रावणः। षष्ठः मासः भाद्रपदः। श्रावणे भाद्रपदे च प्रावृट् वर्षाकालः। सप्तम मासः आश्विनः। अष्टमः कार्तिकः। आश्विने कार्तिके च शरत्कालः।

८. निम्नलिखित श्लोकों में से किसी **एक** का अर्थ हिन्दी में लिखिए– १०

(अ) अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।
अधनस्य कुतो मित्रम्, अमित्रस्य कुतः सुखम्।।

(ब) गते शोको न कर्तव्यो भविष्यं नैव चिन्तयेत् ।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणाः ।।

९. निम्नलिखित वाक्यों का **संस्कृत** में अनुवाद कीजिए– १०

(क) मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।   (ख) श्यामा गीत गाती है।
(ग) धन से सुख नहीं मिलता।   (घ) तुम सब जाओ।
(ङ) बालक दूध पीता है।

१०. (क) 'गम्' धातु का लट् लकार में रूप अथवा 'बालक' शब्द का रूप पंचमी के **तीनों** वचनों में लिखिए। ५

(ख) यण् सन्धि अथवा दीर्घ सन्धि में से किसी **एक** सन्धि की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। ५

म मा । ख ७

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(प्राचीन काव्य तथा रस, छन्द और अलङ्कार)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम तथा **द्वितीय** प्रश्न का उत्तर लिखना अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. अधोलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– ४०

(क) मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गयउ लै विप्र समाजा।।
करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी।।
चरन पखारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा।।
विविध भाँति भोजन करवावा। मुनिबर हृदयँ हरष अति पावा।।
पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह बिसारी।।
भए मगन देखत मुख सोभा। जनु चकोर पूरन ससि लोभा।।
तब मन हरषि बचन कह राऊ। मुनि अस कृपा न कीन्हिहुं काऊ।।
केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहुं सो करत न लावउँ बारा।।

(ख) ऊधौ मन न भए दस बीस।
एक हुतौ सो गयौ स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इन्द्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौं देही बिनु सीस।।
आसा लागि रहति तन स्वासा, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।।
'सूर' हमारैं नंदनंदन बिनु, और नहीं जगदीस।।

(ग) जब तें स्याम–सरन हौं पायो।
तब से भेंट भई श्रीबल्लभ, निज पति नाम बतायो।।
और अविद्धा छाँड़ि मलिनमति, स्रुतिपथ आइ दृढ़ायो।
'कृष्णदास' जन चहुँ जुग खोजत, अब निहचैमन आयो।।

(घ) छावते कुटीर कहूँ रम्य जमुना कै तीर,
गौन रौन–रेती सौं कदापि करते नहीं।
कहैं 'रतनाकर' बिहाइ प्रेम गाथा गूढ़
स्रौन रसना मैं रस और भरते नहीं।

(कृपया पन्ना उलटिए)

गोपी ग्वाल बालनि के उमड़त आँसू देखि,
लेखि प्रलयागम हूँ नैकु डरते नहीं।
होतौ चित चाव जो न रावरे चितावन कौ
तजि ब्रज गाँव इतै पाँव धरते नहीं।।

(ङ) यह संग में लागियैं डोलैं सदा, बिन देखैं न धीरज आनती हैं।
छिनहूँ जो वियोग परैं हरिचन्द तौ चाल प्रलै की सु ठानती हैं
बरुनी में फिरैं न झपैं उझपैं, पल में न समाइवो जानती हैं।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ दुखियाँ नहि मानती हैं।

(च) जय हरि भामिनि जय सुर स्वामिनि तवप्रभुता जग संपत रुरी।
जय जप जोग विसाल करें भूभाल धरे पद पंकज धूरी।।
तव बिन कौन सुखी जग में किम् दीन दुःखी यह होय सबूरी।
है लक्ष्मी जहँ तोर प्रकाश तहाँ नित बास करें सुख भूरी।।

२. (क) करुण रस, हास्य रस, रौद्र रस अथवा वीर रस में से किन्हीं **दो** रसों की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए। १०

(ख) यमक, अनुप्रास, उपमा व उत्प्रेक्षा अलङ्कारों में से किन्हीं **दो** अलङ्कारों की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए। १०

(ग) दोहा, सोरठा, सवैया अथवा उपेन्द्रवज्रा छन्दों में से किन्हीं **दो** छन्दों का लक्षण उदाहरण सहित लिखिए। १०

३. कृष्ण प्रेम में तल्लीन गोपिकाओं के जो शब्दचित्र सूर ने खीचें है, उनका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। १५

४. 'तुलसीदास अपने युग के लोकनायक थे।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।१५

५. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। १५

६. रत्नाकर जी के 'उद्धव–शतक' के आधार पर यह स्पष्ट कीजिए कि उन्हें मार्मिक स्थलों की भली भाँति पहचान है। १५

७. मुल्त जी द्वारा रचित 'सुदामा चरित' काव्य के भाव को अपने शब्दों में लिखिए। १५

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(आधुनिक काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **चार** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) शशि–मुख पर घूँघट डाले
अंचल में दीप छिपाये
जीवन की गोधूली में
कौतूहल से तुम आये।।

(ख) छोड़–छोड़ फूल मत तोड़, आली, देख मेरा
हाथ लगते ही यह कैसे कुम्हलाए हैं?
कितना विनाश निज क्षणिक विनोद में है
दु:खिनी लता के लाल आँसुओं से छाए हैं।

(ग) दाता–भाग्य–विधाता से क्या पाते?
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए!

(घ) दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन
अधरों में चिर नीरव रोदन
युग युग के तम से विषण्ण मन
वह अपने घर में प्रवासिनी।।

(ङ) तुममें अम्लान हँसी है
इसमें अजस्र आँसू, जल,
तेरा वैभव देखूँ या
जीवन का क्रन्दन देखूँ!

(कृपया पन्ना उलटिए)

२. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' के प्रगतिवाद की व्याख्या कीजिए। २०

३. माखनलाल चतुर्वेदी का परिचय देते हुए रचनाओं का उल्लेख कीजिए। २०

४. जयशंकर प्रसाद के काव्य–सौष्ठव की विवेचना कीजिए। २०

५. प्रकृति के सुकुमार कवि की संज्ञा सुमित्रानन्दन पंत को दी गई है। इसकी सार्थकता व्याख्यायित करें। २०

६. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :– २०

(क) पंत का प्रकृति प्रेम।

(ख) निराला की रचनात्मक स्वच्छता।

(ग) मैथिली शरण गुप्त का राष्ट्र प्रेम।

(घ) रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में राष्ट्रीय चिन्तन।

म मा । ख ९

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(आधुनिक गद्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. अधोलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की ससन्दर्भ व्याख्या लिखिए– ४०

(क) राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेनेवाली महिलाओं ने आधुनिकता को राष्ट्रीय जागृति के रूप में देखा और उसी जागृति की ओर अग्रसर होने में अपने सारे प्रयत्न लगा दिये। उस उथल-पुथल के युग में स्त्री ने जो किया, वह अभूतपूर्व होने के साथ-साथ उसकी शक्ति का प्रमाण भी थी। यदि उसके बलिदान, उसके त्याग भूले जा सकेंगे, तो उस आन्दोलन का इतिहास भी भूला जा सकेगा। इस प्रगति द्वारा सार्वजनिक रूप में स्त्री समाज को भी लाभ हुआ।

(ख) एक ही दशा से प्रकृति की शत्रुता है। अपराजिते, तुम पराये घर की सम्पत्ति हो। एक दिन सगे-सम्बन्धियों से क्या तुम्हारा विच्छेद विवाह के हाथों से नहीं लिखा गया है?...बड़ी कठोरता से पाषाण की गहरी रेखाओं में! इसलिए चुप रहो। अगर तुम किसी अन्यायी और आततायी के हाथों में पड़ गयी होती, तभी दु:ख होता। जो भी कहोगी, वही तुम्हारे लिए प्रस्तुत किया जायगा।

(ग) सिंह का पौरुष उन्मुक्त वन में देखा जाता है सिकन्दर! लोहे की शृंखला में कस दिये जाने पर उसके पौरुष की परीक्षा करना उनका उपहास और अपमान है। यदि पौरुष देखना है तो ये शृंखलाएँ खोलकर मेरा धनुष-बाण और खड्ग मुझे दे दिया जाय, फिर जिसको अपने पौरुष का अभिमान हो, वह शस्त्र लेकर सामने आ जाय।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(घ) परोपकार को कोई बुरा नहीं कह सकता, पर किसी को सब कुछ उठा दीजिये, तो क्या भीख माँग के प्रतिष्ठा, अथवा चोरी करके धर्म खोइयेगा, व भूखों मरके आत्महत्या के पापभागी होइयेगा। यों ही किसी को सताना अच्छा नहीं कहा जाता है, पर यदि कोई संसार का अनिष्ट करता हो, उसे राज से दण्ड दिलवाइये व आप ही उसका दमन कर दीजिये तो अनेक लोगों के हित का पुण्य-लाभ होगा।

२. आचार्य विष्णुगुप्त नाटक के आधार पर 'विष्णुगुप्त' अथवा 'घनानन्द' की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। १५

३. 'पंचपरमेश्वर' **अथवा** 'मधुआ' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। १५

४. निम्नलिखित साहित्यकारों में से किसी **एक** की साहित्यिक रचनाओं पर प्रकाश डालिए– १५

पं० प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

५. 'रीढ़ की हड्डी' **अथवा** 'विषकन्या' एकाङ्की का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। १५

म मा । ख १०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ४

(हिन्दी भाषा, देवनागरी लिपि और अङ्कों का विकास, निबन्ध, संक्षेपण, पल्लवन तथा संस्कृत)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित में से किसी **एक** खण्ड का सप्रसंग हिन्दी में अर्थ लिखिए– १०

(क) करारविन्देन पदारविन्दं,
मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं,
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।

अथवा

(ख) पुरा कश्चित् धौम्यो नाम ऋषिः आसीत्, तस्य शिष्यास्त्रयो बभूवुः– आरुणिः, उपमन्युः, वेदश्चेति। स एकं शिष्यमारुणिं पाञ्चाल्यं प्रेरयामास, 'गच्छ वत्स! केदारखण्डं बधान' इति।

२. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **पाँच** का अर्थ लिखकर संस्कृत भाषा में वाक्य बनाइए– ५

भूपतिः, वनाय, स्तुत्वा, गत्वा, श्रूयताम्, कामारिं, मुकुन्दं, सिन्धुरवदनः, स्वीकृत्य।

३. अधोलिखित का संक्षेपण कीजिए– ८

(क) अंग्रेजी पढ़ना खराब नहीं, पर अंग्रेजी पढ़कर अंग्रेज हो जाना खराब है। अंग्रेजी पढ़कर अपने देश को, अपनी भाषा को, अपनी संस्कृति को भूल जाना खराब है। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूँ कि आज के अधिकांश अंग्रेजी पढ़े–लिखे सज्जन अपने देश की प्रत्येक चीज को असम्मान की दृष्टि से देखते हैं, उसकी आलोचना करते हैं, और उसे अपनाने में अपनी

(कृपया पन्ना उलटिए)

मान हानि समझते हैं। पर्व को ही लीजिए। पढ़े-लिखे लोग कहते हैं, यह स्त्रियों का ढोंग है, यह पण्डितों की पोंगापंथी है। वे कहते हैं ये फिजूलखर्ची के साधन है।

(ख) निम्नांकित विचारों का भाव-पल्लवन कीजिए– ७

आत्म सम्मान के लिए मर मिटना ही दिव्य जीवन है।

अथवा

दुष्ट से वैर करना भी बुरा है, प्रेम भी।

४. भारतीय लिपियों का सविस्तार वर्णन करते हुए नागरी लिपि से उनके अन्तर्सम्बन्ध को व्याख्यायित कीजिए। २०

अथवा

नागरी लिपि और रोमन लिपि विषयक अवधारणाओं का वर्णन कीजिए।

५. हिन्दी की पूववर्ती भाषाओं की ध्वनियों का सविस्तार वर्णन कीजिए। २०

अथवा

ध्वनि भेदों का उल्लेख करते हुए उनके वर्गीकरण का तथ्यगत आधार प्रस्तुत कीजिए।

६. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए– ३०

(क) छात्र और राजनीति।
(ख) पर्यावरण प्रदूषण : कारण और निदान।
(ग) नारी शिक्षा।
(घ) विज्ञान का महत्व।
(ङ) राष्ट्र और युवा शक्ति।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) प्रथम खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(सामान्य हिन्दी)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. रचना के आधार पर शब्द कितने प्रकार के होते हैं? उदाहरण सहित लिखिए। १५

२. वाक्य परिवर्तन से क्या अभिप्राय है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। १०

३. भारतीय संस्कृति का आधार अति व्यापक एवं गहन है। एक ओर जहाँ यह उदात्त मानवीय भावनाओं पर आधारित है, वहीं दूसरी ओर विज्ञान सम्मत सिद्धान्तों एवं ऋषि–मुनियों की गहन अनुभूति से युक्त दार्शनिक विचार–विवेक से सम्पन्न है। यदि मानव शरीर से तुलना की जाय तो भारतीय संस्कृति का हृदय विज्ञानमय है, मन–मस्तिष्क दर्शनमय है और आत्मा धर्ममय है। धर्म, शिक्षा–संस्कृति एक दूसरे के पूरक हैं और इनका पारस्परिक सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है। व्यक्ति के संस्कार आचार–विचार, व्यवहार एवं विवेक पर इन तीनों की अमिट छाप होती है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का भावार्थ लिखिए। ८

(ख) रेखाङ्कित अंशों की व्याख्या कीजिए। ७

४. 'सूर्योदय' और 'महोत्सव' का सन्धि–विच्छेद कीजिए और बताइये कि इसमें कौन–सी सन्धि है? १०

५. समास की परिभाषा लिखिए और द्वन्द्व समास का सोदाहरण परिचय लिखिए। १०

६. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं पाँच शब्दों को शुद्ध कीजिए। १०

गृहणी, उज्वल, आर्शीवाद, अजीविका, अनाधिकार, आकांक्षा, निर्दयी, परिक्षा।

७. अधोलिखित शब्दों में से किन्हीं पाँच शब्दों के विलोम लिखिए– १०

उन्नति, अशुभ, आस्था, निरक्षर, कृतज्ञ, सम्मान, संयोग, सार्थक।

(कृपया पन्ना उलटिए)

८. निम्नलिखित मुहावरों में से किन्हीं **पाँच** का अर्थ लिखिए– १०

(क) अन्धों में काना राजा।

(ख) अपना–सा मुँह लेकर रह जाना।

(ग) आँख का तारा।

(घ) उल्टी गंगा बहाना।

(ङ) खून पसीना एक करना।

(च) घी के दीये जलाना।

(छ) दाँत खट्टे करना।

(ज) रंगे हाथों पकड़ना।

९. अधोलिखित वाक्यों में से किन्हीं पाँच को शुद्ध कीजिए– १०

(अ) जनता के अन्दर असन्तोष है।

(ब) किसी भी आदमी को भेज दो।

(स) कृपया कर यह आवेदन स्वीकार करें।

(द) उनका बहुत भारी सम्मान हुआ।

(य) मैं आपका दर्शन करने आया हूँ।

(र) अपने हाथ से स्वयं काम करो।

(ल) प्रत्येक खिलाड़ियों को खेलना चाहिए।

(व) सब लोगों को चलना चाहिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) प्रथम खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(आधुनिक गद्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) समाज की दो आधार–शिलाएँ हैं, अर्थ का विभाजन और स्त्री–पुरुष का सम्बन्ध। इनमें से किसी एक की भी स्थिति में विषमता उत्पन्न होने लगती है, तो समाज का सम्पूर्ण प्रासाद हिले बिना नहीं रह सकता।

(ख) समय स्त्री और पुरुष की गेंद लेकर दोनों हाथ से खेलता है। पुलिंग और स्त्रीलिंग की समष्टि अभिव्यक्ति की कुंजी है। पुरुष उछाल दिया जाता है, उत्प्रेक्षण होता है। स्त्री आकर्षण करती है। यही जड़ प्रकृति का चेतन रहस्य है।

(ग) एक आदमी है घर बसाता है। क्यों बसाता है? एक जरूरत पूरी करने के लिए। कौन–सी जरूरत? अपने अन्दर के किसी उसको....एक अधूरापन कह लीजिए उसे...उसको भर सकने की।

(घ) सामने शैल माला की चोटी पर, हरियाली के विस्तृत जल देश में, नील पिंगल सन्ध्या, प्रकृति की सहृदय कल्पना, विश्राम की शीतल छाया स्वप्न लोक का सृजन करने लगी। उस मोहनी के रहस्यपूर्ण नील जाल का कुहक स्फुट हो उठा।

(ङ) हम परिस्थितियों के शिकार बने हुए हैं। वह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही हैं और जब तक सम्पत्ति की वह बेड़ी हमारे पैरों से न निकलेगी, तब तक यह अभिशाप हमारे शिर पर मँडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न प्राप्त कर सकेंगे जिसपर पहुँचना जीवन का अन्तिम लक्ष्य है।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(च) नही भद्र कुमारी की पहली बात ही ठीक थी। जो कला हृदय से नहीं उठती, वह कष्टसाध्य और निर्जीव होती है। विश्रुत कलाकार की कन्या कला का मर्म जानती है।

२. 'गोदान' का उद्देश्य क्या है? उल्लेख कीजिए। २०

३. 'स्कन्दगुप्त' नाटक के आधार पर उसके नायक का चरित्रचित्रण कीजिए। २०

४. 'आधे–अधूरे' नाटक के कथानक को अपने शब्दों में लिखिए। २०

५. 'अग्निबीज' उपन्यास के माध्यम से लेखक ने पाठकों को क्या संदेश देना चाहा है। स्पष्ट कीजिए। २०

६. 'कफन' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। २०

७. 'गेहूँ का सुख' निबन्ध की समीक्षा कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) प्रथम खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(आधुनिक काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित पद्यावतरणों में से किन्हीं **चार** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– ४०

(क) पटके मैंने पद पाणि मोह के नद में,
जन क्या–क्या करते नहीं स्वप्न में, मद में।
हा! दण्ड कौन, क्या उसे डरुँगी अब भी!
मेरा विचार कुछ दया पूर्ण हो तब भी!
हा दया! हन्त वह घृणा! अहह वह करुणा,
वैतरणी–सी हैं आज जाह्नवी–वरुणा।

(ख) एक यवनिका हटी, पवन से प्रेरित मायापट जैसी।
और आवरण–मुक्त प्रकृति थी हरी–भरी फिर भी वैसी।
स्वर्ण शालियों की कलमें थी दूर–दूर तक फैल रही।
शरद–इंदिरा के मंदिर की मानो कोई गैल रही।

(ग) राम का विषण्णानन देखते हुए कुछ क्षण
हे सखा "विभीषण बोले", आज प्रसन्न वदन
वह नहीं देखकर जिसे समग्र वीर वानर
भल्लूक विगत श्रम हो पाते जीवन–निर्जर,
रघुवीर, तीर सब वही तूण में है रक्षित,
है वही वक्ष, रण–कुशल–हस्त, बल वही अमित।

(घ) व्योम–विपिन में जब वसन्त–सा खिलता नव पल्लवित प्रभात,
बहते हम तब अनिल–स्रोत में गिर तमाल–तम के–से पात,
उदयाचल से बाल हंस फिर उड़ता अम्बर में अवदात,
फैल स्वर्ण पंखों से हम भी करते द्रुत मारुत से बात!

(कृपया पन्ना उलटिए)

(ङ) अमर सुरभित साँस देकर,
मिट गये कोमल कुसुम झर,
रवि करों में चल हुए फिर,
जलद में साकार सीकर,
अंक में तब नाश? को
लेने अनन्त विकास आया!

(च) नहीं, ये मेरे देश की आँखें नहीं हैं
पुते गालों के ऊपर
नकली भवों के नीचे
छाया प्यार के छलावे बिछाती
मुकुर से उठायी हुई
मुस्कान मुस्कुराती।

(छ) मन के बल पर
ले जाता था मैं इसे चाहे जहाँ
दिन को पहाड़ों की चोटियों पर
चढ़ा देता था
रात में
दिन–भर की स्मृतियों से
धो देता था इसकी थकान।

२. अष्टम सर्ग के आधार पर साकेत के कैकेयी के भावों को सोदाहरण व्यक्त कीजिए? २०

३. 'लज्जा' सर्ग के आधार पर कामायनी के अभिप्रेत को स्पष्ट कीजिए। २०

४. 'राम की शक्ति पूजा' अपने आप में एक महाकाव्य है, सिद्ध कीजिए। २०

५. पन्त की कविताओं के आधार पर उनका प्राकृतिक वर्णन कीजिए। २०

६. महादेवी वर्मा की कविताएँ करुण रस प्रधान हैं, सिद्ध कीजिए। २०

७. प्रयोगवादी कवियों में अज्ञेय जी अग्रगण्य हैं, सोदाहरण सिद्ध कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) द्वितीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(भक्ति-काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– १०×४=४०

(क) ऊधो ! हमैं जोग नहिं भावै।
चित में बसत स्यामघन सुन्दर, सो कैसे बिसरावै।।
तुम जो कही सत्य सब बातें, हमरे लेखे धूरि।
या घट-भीतर सगुन निरंतर रहे रूसम भरि पूरि।।
पा लागौं कहियो मोहन सों जोग कूबरी दीजै।
सूरदास प्रभु-रूप निहारैं हमरे संमुख कीजै।।

(ख) सानुज पठइअ मोहि बन कीजिअ सबहि सनाथ।
नतरु फेरिअहिं बंधु दोउ नाथ चलौं मैं साथ।।

(ग) राम दरस लगि लोग सब करत नेम उपबास।
तजि तजि भूषन भोग सुख जिअत अवधि की आस।।

(घ) अति अपार करता कर करना। बरनि न कोई पावै बरना।।
सात सरग जो कागद करई। धरती समुद दुहूँ मसि भरई।।
जावत जग साखा बनढाखा। जावत केस रोंव पंखि पाँखा।।
जावत खेह रेह दुनियाई। मेघबूँद औ गगन तराई।।
सब लिखनी कै लिखु संसारा। लिखि न जाइ गति समुद अपारा।।

(ङ) कवि बियास कँवला रस पूरी। दूरि सो नियर, नियर सो दूरी।।
नियरे दूर फूल जस काँटा। दूरि जो नियरे, जस गुड़ चाँटा।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(च) जानत है वह सिरजनहारा; जो किछु है मन-मरम हमारा।
हिंदू मग पर पांव न राखेउँ; का जौ बहुतै हिंदी भाखेउँ।।
मन इसलाम मसल कै माँजेउँ; दीन जेंवरी करकस भाँजेउँ।
जहाँ रसूल अल्लाह-पियारा; उम्मत को मुक्तावनहारा।।

२. 'सूर में जितनी भावुकता एवं सहृदयता है प्रायः उतनी ही चतुरता और वचन-विदग्धता भी है।' इस कथन को सोदाहरण प्रमाणित कीजिए। २०

अथवा

सूर के शृंगार-वर्णन की समीक्षा कीजिए।

३. 'तुलसी का काव्य समन्वय की विराट् चेष्टा है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।२०

अथवा

'अयोध्याकाण्ड' के आधार पर भरत का चरित्रचित्रण कीजिए।

४. 'पदमावत अन्योक्तिपरक काव्य है या समासोक्तिपरक? सतर्क अपना मत दीजिए। २०

अथवा

'नागमती का वियोगवर्णन हिन्दी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।' सोदाहरण प्रमाणित कीजिए।

५. 'अनुराग-बाँसुरी' के प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालिए। २०

अथवा

'अनुराग-बाँसुरी' के काव्य-सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : द्वितीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(रीति काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना :- प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. अग्रांकित पद्य अवतरणों में से किन्हीं **चार** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–४०

(क) वज्र ते कठोर है, कैलास तें विशाल काल,
दण्ड तें कराल, सब काल काल गावई।
केसव त्रिलोक के विलोकि हारे देव सब,
छोड़ चन्द्रचूड़ एक और को चढ़ावई।।

(ख) खेलिये फाग निसंक ह्वै आज मयंकमुखी कहैं भाग हमारो।
लेहु गुलाल दुहूँ कर मैं पिचकारिन रंग हिये मँह मारो।
भावै तुमै सो करो मोहिं लाल पै पाँय परौं जिन घूँघट टारो।
बीर की सौं हम देखिहैं कैसे अबीर तौ आँखें बचाय कै डारो।

(ग) बिहँसति सकुचति सी हिये कुच आँचर बिच बाँहि।
भीजे पट तट कों चली न्हाय सरोवर माँहि।।
बिहँसि बुलाय बिलोकि उत प्रौढ़ तिया रस घूमि।
पुलकि पसीजति पूत को पिय चूम्यौ मुँह चूमि।।

(घ) ग्राम दये धाम दये अमित अराम दये,
अन्न–जल दीन्हें जगती के जीवधारी को।
दाता जयसिंह दोय बात तौ न दीनी कहूँ,
बैरिन को पीठि और डीठि परनारी को।।

(ङ) लाज–लगाम न मानहीं नैना मो बस नाहिं।
ये मुहजोर तुरंग लौं ऐंचत हूँ चलि जाहिं।।
सनि कज्जल चख झख लगन उपज्यौ सुदिन सनेह।
क्यौं न नृपति ह्वै भोगवै लहि सुदेस सब देह।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(च) विपिन–मारग राम विराजहिं।
सुखद सुन्दरि सोदर भ्राजहीं।।
विविध श्रीफल सिद्धि मनो फल्यौं।
सकल साधन सिद्धिहि लै चल्यौ।।

२. महाकवि केशवदास की काव्य कला पर विस्तार से प्रकाश डालिए। २०

३. बिहारी की वाग्विभूति को ध्यान में रखते हुए उनके व्यक्तित्व को विस्तार से परिभाषित कीजिए। २०

४. 'पद्माकर हिन्दी के गिने–चुने कवियों में हैं,' इस वाक्य के आलोक में पद्माकर की काव्य कला को व्याख्यायित कीजिए। २०

५. 'बिहारी वैभव' पुस्तक के आधार पर महाकवि बिहारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्पष्ट कीजिए। २०

६. रामचन्द्रिका एवं कविप्रिया को संदर्भित करते हुए महाकवि केशवदास की प्रकृति वर्णन की विस्तार से विवेचना कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा : द्वितीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(हिन्दी भाषा का इतिहास और हिन्दी साहित्य का इतिहास)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

निर्देश–केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से दो प्रश्न करना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

खण्ड (क)

१. भाषा और संस्कृति के पारस्परिक सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

२. हिन्दी के विकास में प्राकृत के योगदान का निरूपण कीजिए।

३. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।

४. देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

५. अवधी भाषा की प्रमुख विशेषताओं का प्रतिपादन कीजिए।

खण्ड (ख)

६. सिद्ध और नाथ साहित्य के साम्य और वैषम्य पर प्रकाश डालिए।

७. कृष्णकाव्य परम्परा में सूर का स्थान निर्धारित कीजिए।

८. रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

९. खड़ी बोली गद्य के विकास में द्विवेदी–युग के योगदान का निरूपण कीजिए।

१०. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) परमाल रासो। (ख) छायावाद।

(ग) एकांकी नाटक। (घ) नवगीत।

उद्वि मा । घ १६

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा : द्वितीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(हिन्दी भाषा का इतिहास और हिन्दी साहित्य का इतिहास)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

निर्देश–केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित हैं। प्रत्येक खण्ड से दो प्रश्न करना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

खण्ड (क)

१. भाषा और संस्कृति के पारस्परिक सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

२. हिन्दी के विकास में प्राकृत के योगदान का निरूपण कीजिए।

३. राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व का प्रतिपादन कीजिए।

४. देवनागरी लिपि के उद्भव और विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

५. अवधी भाषा की प्रमुख विशेषताओं का प्रतिपादन कीजिए।

खण्ड (ख)

६. सिद्ध और नाथ साहित्य के साम्य और वैषम्य पर प्रकाश डालिए।

७. कृष्णकाव्य परम्परा में सूर का स्थान निर्धारित कीजिए।

८. रीतिमुक्त काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

९. खड़ी बोली गद्य के विकास में द्विवेदी–युग के योगदान का निरूपण कीजिए।

१०. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) परमाल रासो। (ख) छायावाद।

(ग) एकांकी नाटक। (घ) नवगीत।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(प्राचीन काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **चार** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) पीन पयोधर दूबरि गता, मेरु उपजल कनक लता।
ए कान्हु ए कान्हु तोरि दोहाई, अति अपूरब देखलि साई।।

(ख) फागुन मास धनि जीव उचाट। विरह बिखिन भेल हेरओ बाट।।
आयल मत पिक पंचम गाब। से सुनि कामिनि जीबहु सजाब।।

(ग) तूँ तूँ करता तूँ भया, मुझमैं रही न हूँ।
वारीं तेरे नांउं परि, जित देखौं तित तूँ।।

(घ) हम घर जाला आपनां, लिए मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं सासका, जो चलै हमारै साथि।।

(ङ) कह प्रेमा सुन लाडली, धरो करेजे हाथ।
हिय फाटे सुन यह कथा, मोंसे कही न जात।।

(च) हंसा दोषि तरंदिआ, बगा आइआ चाउ।
डुबि मुए बग बपुड़े, सिरु जलि ऊपर पाउ।।

२. विद्यापति के संयोग शृंगार पर सोदाहरण प्रकाश डालिए। २०

३. 'विद्यापति ने नायिका के बाह्य स्वरूप का दर्शन एवं निरूपण अधिक किया है' सोदाहरण लिखिए २०

(कृपया पन्ना उलटिए)

४. 'कबीर के राम तुलसी के राम से भिन्न हैं' इस कथन की सतर्क समीक्षा कीजिए। २०

५. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिए। २०

६. 'अनुराग–बाँसुरी' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। २०

७. सूफी काव्य परम्परा में शेख फरीद के महत्व पर प्रकाश डालिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(भारतीय साहित्यशास्त्र एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना– खण्ड (क) से **तीन** और **खण्ड (ख)** से **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

खण्ड (क)

१. केशवदास की काव्य शास्त्रीय मान्यताओं पर प्रकाश डालिए।

२. रामचन्द्र शुक्ल की रस सम्बन्धित मान्यताओं का विवेचन कीजिए।

३. अलंकारों का वर्गीकरण कीजिए।

४. दोहा, चौपाई तथा रोला के लक्षण और उदाहरण लिखिए।

५. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नन्ददुलारे वाजपेयी की आलोचना दृष्टि।

(ख) काव्य लक्षण।

(ग) साधारणीकरण।

(घ) व्यंजना।

खण्ड (ख)

६. लान्जाइनस के उदात्त सिद्धान्त पर प्रकाश डालिए।

७. टी०एस० इलियट के काव्य सिद्धान्तों का परिचय दीजिए।

८. साहित्य के समाजशास्त्र की अवधारणा का विश्लेषण–विवेचन कीजिए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा : (साहित्यरत्न) तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ५

(साहित्यिक निबन्ध)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर साहित्यिक निबन्ध १००० शब्दों में लिखिए– ५०

(क) जयशंकर प्रसाद।

(ख) साहित्य और समाज का सम्बन्ध।

(ग) इण्टरनेट की उपयोगिता।

(घ) हिन्दी की नयी कविता।

२. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर साहित्यिक निबन्ध १००० शब्दों में लिखिए– ५०

(क) महाप्राण निराला।

(ख) वक्रोक्ति सम्प्रदाय।

(ग) हिन्दी कहानी का विकास।

(घ) संचार माध्यमों की उपयोगिता।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

कबीरदास

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) कबीर जग की को कहै, भौ जलि बूड़ै दास,
पारब्रह्म पति छाँड़ि के करै मान की आस।

(ख) कबीर इस संसार का, झूठा माया मोह।
जिहि घरि जिता बधावणा, तिहि धरि तिता अंदोह।।

(ग) माया हमसूं यूं कह्या, तू मति दे रे पूठि।
और हमारा हम बलू, गया कबीरा रुठि।।

(घ) मन रे मनहीं उलटि समाना।
गुरु प्रसादि अकल भई तोको, नहिं तर था बेगाना।
नेरे थैं दूरि दूर थें नियरा, जिनि जैसा करि जाना।
औलौती का चढ़या बलीडै, जिनि पीया तिन माना।
उलटे पवन चक्र षट बेधा, सुनि सुरति लै लागी।
'अमर न मरै' मरै नहि जीवै, ताहि खोजि बैरागी।
अनभै कथा कवन सू कहिए है कोई चतुर बमेकी।
कहै कबीर गुर दीया पलीता, सो झल बिरलै देखी।।

(ङ) एक अंचभा देख्या रे भाई।
ठाढ़ा स्यंध चरावै गाई।

(कृपया पन्ना उलटिए)

पहले पूत पछै भई माइ। चेला के गुर लागै पाइ।
जल की मछली तरवरि व्याई। पकड़ि बिलाई मुरगै खाई।
बैलहिं डारि गूनि घरि आई, कूता को लै गईं बिलाई।
तलि करि साषा ऊपरि करि मूल, बहुत भाँति जड़ लागे फूल।
कहै कबीर या पद को बूझौ, ताको तीन्यू त्रिभुवन सूझै।।

(च) संतो भाई आई ग्यान की आँधी रे।
भ्रम की टाटी सबै उड़ानी, माया रहै न बांधी।
हिति चित की द्वै थूनी गिरानी, मोह बलिंडा टूटा।
त्रिष्ना छानि परि धर ऊपरि, कुबधि का भांडा फूटा।
जोग जुगति करि संतनि बांधी, निरचू चुवैं न पाणी।
कूट कपट काया का निकस्या, हरि की गति जब जाणी।
आंधी पीछै जो जल बूठा प्रेम हरी जन भीना।
कहै कबीर भान के प्रकटें, उदित भया तम भीना।

(छ) अब घटि प्रकट भये राम राई, सोधि सरीर कनक की नाईं।
कनक कसौटी जैसे कसि लेइ सुनारा, सोधि सरीर भयो तन सारा।
उपजत उपजत बहुत उपाई, मन थिर भयौ तबै थिति पाइ।
बाहरि खोजत जनम गंमाया, उनमनी ध्यान घट भीतरि पाया।
बिन परचै तन काँच कथीरा, परचै कंचन भया कबीरा।।

२. हिन्दी काव्य में कबीर का स्थान निर्धारित कीजिए। २०

३. कबीर की पदावली के काव्य सौन्दर्य की परीक्षा कीजिए। २०

४. कबीर का सुधारक पक्ष उनके भाव पक्ष का एक अंग मात्र है। इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं। २०

५. 'ज्ञानमार्ग की बातें कबीर ने हिन्दू साधु–संन्यासियों से ग्रहण की, और सूफियों के सत्संग से उन्होंने प्रेम तत्व का मिश्रण किया और अपना एक पथ चलाया', इस मत की मीमांसा कीजिए। २०

६. 'हिन्दी साहित्य के हजार वर्षों के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व लेकर कोई लेखक उत्पन्न नहीं हुआ।' ये कथन किसका है नामोल्लेख करते हुए विवेचना कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

सूरदास

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित पदों में से किन्हीं **चार** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) अविगत–गति कछु कहत न आवै।
ज्यौ गूँगैं मीठे फलकौ रस, अन्तरगत ही चाखत भावै।।
परम स्वाद सबही जु निरंतर, अमित तोष मनही उपजावै।
मन बानीकौं अगम अगोचर, सो जानै जो तिहिँ रस पावै।।
रूप–रेख–गुन–जाति–जुगुति–बिनु, निरालंब मन चक्रित धावै।
सब बिधि अगम बिचारहि तातैं, सूर सगुन लीला पद गावै।।

(ख) हरि की बालछबि को बरनि।
सकल सुख की सीवँ, कोटि मनोज–सोभा हरनि।।
भुज भुजंग, सरोज नैननि, बदन बिधु जित लरनि।
रहे बिबरन सलिल, नभ, उपमा अपर दुति डरनि।।
मंजु मेचक मृदुल तनु, अनुहरत भूषन भरनि।
मनु सुभग सिंगार सिसु–तरु, फल्यो अद्‌भुत फरनि।।

(ग) पिय–बिनु नागिनि कारी रात।
जौ कहुँ जामिनि उवति जुन्हैया, डसि उलटी ह्वै जात।।
जंत्र न फुरत, मंत्र नहिँ लागत, प्रीति सिरानी जात ।
सूर, स्याम–बिनु बिकल बिरहनी, मुरिमुरि लहरैँ खात।।

(घ) सखी री ! मुरली लीजै चोरि।
जिनि गुपांल कीन्हे अपने बस, प्रीति सबनि की तोरि।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

छिन इक घर–बाहर निसि–बासर, धरत न कबहूँ छोरि।
कबहूँ कर, कबहूँ अधरन–कटि, कबहूँ खोँसत जोरि।।
ना जानौं, कछु मेलि मोहिनी, राखे अँग अँग भोरि।
सूरदास प्रभुकौ मन सजनी, बँध्यौ राग की डोरि।।

(ङ) अँखियाँ हरि–दरसन की भूखी।
कैसे रहति रूप–रस राँची, ये बतियाँ सुनि सूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत, तन एती नहिँ झूखी।
अब यह जोग सँदेसौ सुनि–सुनि, अति अकुलानी दूखी।।
बारक वह मुख आनि दिखावहु, दुहि पय पिबत पतूखी।
सूर, सु कत हठि नाव चलावत, ये सरिता है सूखी।।

(च) ऊधौ ! मन न भए दस–बीस।
एक हुतौ, सो गयो स्याम सँग, को अवराधै ईस।।
इंद्री सिथिल भईँ केसव, बिनु, ज्यौँ सरीर बिनु–सीस।
आसा लागि रहति तन, स्वाँसा, जीवहिँ कोटि बरीस।।
तुम तौ सखा स्यामसुंदर के, सकल जोगके ईस।
सूर, हमैँ तौ नँदनंदन–बिन, और नाहिँ जगदीस।।

२. सूरदास के वात्सल्य–वर्णन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। २०

३. अष्टछाप कवियों में सूर के महत्व का प्रतिपादन कीजिए। २०

४. सूर के भ्रमरगीत के साहित्यिक सौष्ठव पर प्रकाश डालिए। २०

५. सूर साहित्य के आधार पर राधा का चरित्र–चित्रण कीजिए। २०

६. सूर की भक्ति–पद्धति का विवेचन कीजिए। २०

७. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :– २०

(क) साहित्य लहरी। (ख) पुष्टिमार्ग।
(ग) दृष्टिकूट। (घ) मुरली माधुरी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

तुलसीदास

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– ४०

(क) रामचरित चिंतामनि चारु। संत सुमति तिय सुभग सिंगारु।।
जग मंगल गुनग्राम रास के। दानि मुकुति धन धरम धाम के।।
सदगुर ग्यान बिराग जोग के। बिबुध बैद भव भीम रोग के।।
जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल ब्रत धरम नेम के।।

(ख) बर दंत की पंगति कुंदकली, अधराधर–पल्लव खोलन–की।।
चपला चमकै धन बीज, जगै छबि मोतिन माल अमोलन–की।
घुँघराली लटैं लटकैं मुख–ऊपर, कुंडल लोल, कपोलन–की।
निवछावरि प्रान करै तुलसी, बलि जाँउ लला इन बोलन–की।।

(ग) भरत प्रीति कछु गाएउँ जस बुधि मोरि।
बहुरि राम–जस भाखउँ सिवहिं निहोरि।।
सुनासीर के सुत पर दाया कीन्ह।
अत्री–प्रिया जानकिहिँ चैलहि दीन्ह।।
बधि विराध सर भंगहि गति प्रभुदेइ।
मिलेउ सिष्य घट–संभव भगतिहि भेइ।

(कृपया पन्ना उलटिए)

तब प्रभु संग सुतीक्षण चले कृपाल।
देखि अगस्त आश्रमहिँ भए निहाल।।

(घ) अब लौं नसानी, अब न नसइहौं।
राम–कृपा भव–निसा सिरानी, जागे फिर न डसइहौं।।
पायौ नाम चारु चिन्तामनि, उर–कर–तें न खसइहौं।
स्याम–रूप सुचि रुचिर कसौटी, चित–कंचनहिं कसइहौं।।
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसइहौं।
मन–मधुपहिँ, पनकै 'तुलसी', रघुपति पद–कमल बसइहौं।।

(ङ) राम काम–रिपु–चाप चढ़ायो!
मुनिहिं पुलक, आनंद नगर, नभ निरखि निसान बजायो।।
जेहि पिनाक बिनु नाक किए नृप, सबहिँ विषाद बढ़ायो।
सोइ प्रभु कर परसत टूटयो, जनु, हुतो पुरारि पढ़ायो।।
पहिराई जयमाल जानकी, जुवतिन्ह मंगल गायो।
'तुलसी' सुमन बरषि, हरषे सुर, सुजस तिहूँ पुर छायो।।

२. श्री रामचरित मानस के उत्तर काण्ड में वर्णित श्रद्धा–भक्ति प्रसंग की उपादेयता का चित्रण कीजिए। २०

३. तुलसीदास के दाम्पत्य जीवन को केन्द्र में रखते हुए उनके पारिवारिक प्रसंग की महत्ता पर प्रकाश डालिए। २०

४. विनय पत्रिका के स्तुति प्रसंग में आए पदों के वर्ण्य की समीक्षा कीजिए। २०

५. बरवै–रामायण के सम्पूर्ण कथा प्रसंगों का संक्षेप में चित्रण कीजिए। २०

६. तुलसीदास की भक्ति–भावना के विभिन्न रूपों का मूल्यांकन कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(साहित्यकारों का विशेष अध्ययन)

जयशंकर प्रसाद

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना– प्रथम एवं **द्वितीय** प्रश्न का उत्तर लिखना अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्ही **तीन** प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं **दो** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– २०

(क) नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में,
पीयूष-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।

(ख) पतझड़ था, झाड़ खड़े थे सूखी-सी फुलवारी में
किसलय नव कुसुम बिछाकर आये तुम इस क्यारी में!
शशि-मुख पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाये
जीवन की गोधूली में कौतूहल से तुम आये।

(ग) छोड़कर पार्थिव भोग विभूति, प्रेयसी का दुर्लभ वह प्यार।
पिता का वक्षभरा वात्सल्य, पुत्र का शैशव सुलभ दुलार।
दु:ख का करके सत्य निदान, प्राणियों का करने उद्धार।
सुनाने आरण्यक संवाद, तथागत आया तेरे द्वार।।

२. निम्नांकित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– २०

(कृपया पन्ना उलटिए)

(क) राजनीति? राजनीति ही मनुष्य के लिए सब कुछ नहीं है। राजनीति के पीछे नीति से भी हाथ न धो बैठो, जिसका विश्वमानव के साथ व्यापक सम्बन्ध है। राजनीति की व्यापक छलनाओं से सफलता प्राप्त करके क्षण-भर के लिए तुम अपने को चतुर समझने की भूल कर सकते हो, परन्तु इस भीषण संसार में एक प्रेम करनेवाले हृदय को खो देना, सबसे बड़ी हानि है शकराज! दो प्यार करनेवाले हृदयों के बीच में स्वर्गीय ज्योति का निवास है।

(ख) पाप और कुछ नहीं है यमुना, जिन्हें हम छिपाकर किया चाहते हैं, उन्हीं कर्मों को पाप कह सकते हैं; परन्तु समाज का एक बड़ा भाग उसे यदि व्यवहार्य बना दे, तो वही कर्म हो जाता है, धर्म हो जाता है। देखती नहीं हो, इतने विरुद्ध मत रखनेवाले संसार के मनुष्य अपने-अपने विचारों में धार्मिक बने हैं। जो एक के यहाँ पाप है, वही तो दूसरे के लिए पुण्य है।

(ग) प्राचीन साहित्य में छायावाद अपना स्थान बना चुका है। हिन्दी में जब इस तरह के प्रयोग आरंभ हुए, तो कुछ लोग चौंके सही, परन्तु विरोध करने पर भी अभिव्यक्ति के इस ढंग को ग्रहण करना पड़ा। कहना न होगा कि ये अनुभूतिमय आत्मस्पर्श काव्यजगत् के लिए अत्यंत आवश्यक थे। काकु या श्लेष की तरह यह सीधी वक्रोक्ति भी न थी। बाह्य से हटकर काव्य की प्रवृत्ति आंतर की ओर चल पड़ी थी।

३. जयशंकर प्रसाद का संक्षिप्त जीवन-परिचय लिखिए। २०

४. 'कामायनी' के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डालिए। २०

५. ध्रुवस्वामिनी नाटक के आधार पर 'चन्द्रगुप्त' का चरित्रचित्रण कीजिए।२०

६. 'लहर' काव्यकृति की 'गीतियोजना' पर प्रकाश डालिए। २०

७. 'कंकाल' उपन्यास के प्रमुख पात्र का चरित्रांकन कीजिए। २०

८. 'आँसू' के काव्यसौन्दर्य पर प्रकाश डालिए। २०

९. 'इन्द्रजाल' कहानी-संग्रह की किसी एक कहानी की कहानी-कला के आधार पर समीक्षा कीजिए। २०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

व्याकरण

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–किन्हीं **पाँच** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

१. भारतीय व्याकरण शास्त्र की परम्परा में हिन्दी व्याकरण का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

२. भाषा की शाब्दिक परिभाषा लिखते हुए भाषा और व्याकरण के सम्बन्ध का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

३. क्रिया और क्रिया विशेषण के सम्बन्धों पर एक लघु निबन्ध लिखिए।

४. अक्षर, शब्द एवं वाक्य को स्पष्ट करते हुए भाषा की निर्माण योजना पर प्रकाश डालिए।

५. कारकों की वाक्य रचना में क्या भूमिका है? स्पष्ट कीजिए।

६. सन्धि और समास में आप क्या अन्तर समझते हैं? स्पष्ट कीजिए।

७. लिङ्ग के कितने भेद होते हैं? वाक्य रचना में इनकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

८. उपसर्ग और प्रत्यय का अन्तर स्पष्ट करते हुए सोदाहरण वर्णन कीजिए।

९. सन्धि को परिभाषित करते हुए स्वर सन्धि को सोदाहरण समझाइए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) : तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

हिन्दी पत्रकारिता

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना– **खण्ड (क)** और **खण्ड (ख)** से **दो-दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए। **खण्ड (ग)** से **एक** प्रश्न का उत्तर लिखना अनिवार्य है। सभी प्रश्नों के अङ्क समान हैं।

खण्ड (क)

१. 'हिन्दी दैनिक समाचार-पत्र का इतिहास' विषयक एक निबन्ध ३०० शब्दों में लिखिए।

२. 'वर्नाक्यूरल प्रेस एक्ट' को हिन्दी-पत्रकारिता के सन्दर्भ में व्याख्यायित कीजिए।

३. जनसमस्याओं के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी-पत्रकारिता का दायित्व-बोध किन रूपों में लक्षित होता है, सोदाहरण प्रकाश डालिए।

खण्ड (ख)

४. समाचार पत्र की परिभाषा और अवधारणा को सुस्पष्ट करते हुए दो समाचार (क्रीड़ा और विज्ञान-विषयक) लिखिए।

५. समाचार के प्रमुख स्रोतों पर सविस्तार प्रकाश डालिए।

६. मुद्रण-कला की अत्याधुनिक तकनीक को समझाइए।

खण्ड (ग)

७. हिन्दी-पत्रकारिता में अनुवाद-कला की उपयोगिता और महत्ता का क्या महत्व है, स्पष्ट कीजिए।

८. निम्नांकित विषयों में से किन्हीं **दो** पर अपनी सार्थक टिप्पणी कीजिए–

(क) प्रूफ-पठन और संशोधन।

(ख) पृष्ठ साज-सज्जा।

(ग) संक्षिप्तीकरण।

(घ) व्हाट्सएप।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

उत्तमा (साहित्यरत्न) तृतीय खण्ड परीक्षा–सन् २०१८ (संवत् २०७५)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ४

(प्राचीन भाषा)

संस्कृत

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं **दो** की ससन्दर्भ **हिन्दी** में व्याख्या कीजिए–२०

(क) धारा निपातैर भिहन्यमानाः;
कदम्वशाखासु विलम्बमानाः।
क्षणार्जितं पुष्परसावगाढम्;
शनैर्मदं षट्चरणा स्त्यजन्ति।।

(ख) मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः,
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
पर गुणपर माणून्पर्वती कृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।

(ग) श्लेषे केचन शब्दगुम्फविषये केचिद्रसे चापरे–
लंकारे कतिचित्सदर्थं विषये चान्ये कथावर्णने।
आसर्वत्र गभीरधीर कविता विन्ध्याटवी चातुरी–
संचारी कवि कुम्भि कुम्भभि दुरो वाणस्तु पञ्चाननः।।

२. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की ससन्दर्भ व्याख्या **हिन्दी** में कीजिए–२०

(क) भगवति वन देवते! आवयोर्मध्ये यश्चौरस्तं कथम्। अथ पापबुद्धिपिता शर्मा कोटरस्थः प्रोवाच–भो? शृणुत–शृणुत! धर्मवुद्धिनाहृतमेतद्धनम्।

(ख) पुरुष प्रमाणे गत्तजाते, शिलैका सुमनोहरावलोकिता। तथधश्चन्द्रकान्त–शिलाविनिर्मितं, नानारत्नखचितं द्वात्रिंशत्पुत्तलिकाभिर्युक्तमतिरमणीयं दिव्यमेकं सिंहासनमपश्यत्।

(ग) एष भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुण्डलम् आखण्डल दिशः, दीपको ब्रह्माण्ड–भाण्डस्य प्रेयान् पुण्डरीक–पटलस्य, शोक–विमोकः कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलम्ब–कदम्वस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहास्य, इनश्च, दिनस्य।

(कृपया पन्ना उलटिए)

३. निम्नलिखित में से किसी **एक** पाठ का सारांश लिखिए– १०

(क) सीतायाः रावणं प्रत्युत्तरम्।
(ख) यज्ञाश्वः।
(ग) वञ्चक चरित्रम्।

४. (क) प्रथम प्रश्न पत्र में से किसी एक श्लोक का अन्वय लिखिए– १०

(ख) निम्नांकित शब्दों में से किसी **एक** शब्द के रूप सभी विभक्तियों एवं वचनों में लिखिए– १०
शिष्य, नदी, धेनु।

(ग) निम्नांकित धातुओं में से किसी **एक** धातु का तीनों वचनों में लङ् लकार का रूप लिखिए– १०
पठ्, भू, क्री।

५. (क) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **दो** शब्दों के विग्रहपूर्वक **समास** लिखिए– १०
व्रह्मर्षिः, पाणिपादम्, पितरौ, रथाश्वम्।

(ख) निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **दो** शब्दों की नियमोल्लेखपूर्वक सन्धि कीजिए– ५
राज्ञः+पुरुषः, भीम+अर्जुनो, शीत+उष्णः।

(ग) अधोलिखित सूक्ति में से किसी **एक** सूक्ति का भावार्थ **हिन्दी** में लिखिए– ५

(क) न कामासक्तस्य कार्यानुष्ठानम्।
(ख) विश्वासघातिनो न निष्कृतिः।